

जल चर्चा

JAL CHARCHA

April 2021
अप्रैल





भारत सरकार

भारत में विश्व का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान



सफाई भी

दवाई भी

कड़ाई भी

COVID19 का टीका लगवाने के लिए
www.cowin.gov.in या आरोग्य सेतु एप पर रजिस्टर करें



जीतेंगे
कोरोना से
लड़ाई भी

#Unite2FightCorona

अधिक जानकारी के लिए www.mohfw.gov.in पर जाएं

CONTENTS

• From the Chief Editor's Desk	2
• अगस्त्य झील	3
• कोयना नदी	4
• Conservation(MGNREGA)	5
• River Rejuvenation	6
• जल योद्धा	7
• उजनी बांध	8
• 23 rd and 24 th Water Talks	9
• लातूर शहर नगर निगम	10
• Industry	11
• Jal Shakti Abhiyan	12-13
• World Water Day Activities	14
• Namami Gange	15-18
• लेंग ग्राम पंचायत	19
• Know Zone	20
• स्वच्छता पखवाड़ा	21
• CSR	22
• District Initiative	23
• People's Initiative	24
• News In Brief	25-27
• Snippets	28
• In Newspaper	29-30
• NGO	31
• Institute	32

Chief Editor : Pankaj Kumar

Editor : Sanjay Awasthi

Co-Editor : Girraj Goyal

Sub-Editor : Mohit Sharma

Design & Comm. Team : Fusion
Corporate

Solutions Pvt. Ltd.

Publisher : B.H.T. Vaiphei

[as Under Secretary (IEC), Ministry of Jal Shakti, Do
WR, RD & GR

Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi - 110001]

Printer : Krishna Enterprises

2070/S, Chuna Mandi, Paharganj, New Delhi - 110055

Reproduction in any form is prohibited without written permission.
Any dispute related to the content of the magazine should be addressed
to the publisher.



3 अगस्त्य झील



5 Conservation (MGNREGA)



13 Namami Gange



24 People's Initiative



4 कोयना नदी



8 उजनी बांध

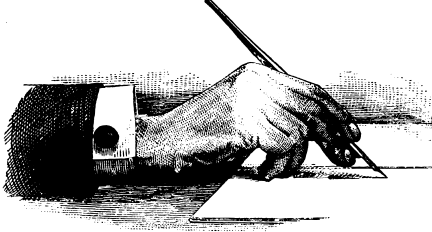


19 'लेंग' ग्राम पंचायत



32 Institute

“



From the Chief Editor's Desk



”

All of us are going through tough times due to the Covid-19 pandemic, which has hit the country again. I wish for the well-being of everyone and am sure that we will together win this battle.

'Jal Shakti Abhiyan-2: "Catch the Rain, Where it Falls, When it Falls" campaign was launched by the Hon. Prime Minister of India on the occasion of World Water Day on 22nd March. A historic agreement for Ken-Betwa River Linking Project was also signed between the Hon. Union Minister for Jal Shakti and Chief Ministers of Uttar Pradesh and Madhya Pradesh in the august presence of the Hon. Prime Minister. It was indeed a landmark day for the Department in the direction of effective water management in the country. The Hon. PM asserted that rapid development is not possible without water security. He also reiterated that rainwater harvesting will play a pivotal role in achieving success in the water sector. To mark the occasion of World Water Day, our Department also organised and participated in several activities to spread awareness about water conservation in general and river rejuvenation in particular. Swachhta Pakhwada was also observed by all organisations of the Department from 16th to 31st March 2021.

To highlight the importance of rainwater harvesting, we have included articles that show the impact it can make. In the Water Conservation section, we have shared a story of rainwater harvesting undertaken through MGNREGA in Coimbatore district which remarkably improved the alarming groundwater situation in the entire region. The inspiring account of Shri Akshay Aggarwal, who benefitted several people through his work on rainwater harvesting in Assam, has also been included in the Water Warrior section of this issue of Jal Charcha. One of the speakers at the monthly Water Talks also spoke on the importance of spring shed management to make the Himalayan region water-secure.

Two outstanding works in the direction of rejuvenation of rivers – breathing life to Kaveri River in Khandwa, Madhya Pradesh and revival of 43 rivers across four states by Art of Living – have also been discussed in this issue. Through Jal Charcha, we continue to bring to you the success stories of the 2nd National Water Awards in various fields such as Industry, CSR, NGO, District, Educational Institute and Urban Local Body. We have also tried to make the magazine creatively informative by graphically portraying some of the content related to water.

I hope that you will have a good reading experience of Jal Charcha and will look forward to your feedback.

Warm Regards

(Pankaj Kumar)

अगस्त्य झील

जल संकट पूरे विश्व में चिंता का एक बड़ा एवं गंभीर विषय बन गया है। इस समस्या से बचने के लिए एकमात्र समाधान जल संरक्षण ही है। यदि विश्व के सभी लोग जल संरक्षण करें तो जल के प्राकृतिक संसाधनों का भार कम होगा और जो वर्षा का अतिरिक्त जल बेकार हो रहा है वह भी उपयोग में लाया जा सकेगा। हमारे देश भारत के संदर्भ में यदि बात की जाए तो हम पाते हैं कि हमारे लिए जल संरक्षण कोई नवीन अवधारणा नहीं है बल्कि यह हमें विरासत में मिली है। पूर्वकाल में भारतीय समाज जल संरक्षण की तुलना में आज के समाज से कहीं ज्यादा कुशल और जागरूक था। 21वीं शताब्दी का विश्व भले ही सभी तकनीकों और शिक्षा से लैस क्यों न हो पर जल संरक्षण परंपरा में अभी भी पूर्वकाल की तकनीकों का कोई तोड़ नहीं है।

'जल चर्चा' के प्रत्येक अंक में हम आपको प्राचीन जल परंपरा से अवगत कराते हैं। इस अंक में हम आपको कर्नाटक की बादामी गुफाओं में स्थित अगस्त्य झील के बारे में बता रहे हैं। बादामी गुफाएँ कर्नाटक राज्य के बागलकोट जिले में स्थित हैं और ऐतिहासिक से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जहाँ हर साल अनेकों सैलानी आते हैं। ये गुफाएँ चट्टानों को काटकर बनाई गई हैं। यहाँ एक बादामी किला व गुफाओं के बीच कई मंदिर भी स्थित हैं। इन्हीं गुफाओं के बीच स्थित है 'अगस्त्य झील'! यह कहा जा सकता है कि इन गुफाओं का जो सबसे मुख्य व लोकप्रिय बिंदु है वह अगस्त्य झील ही है।

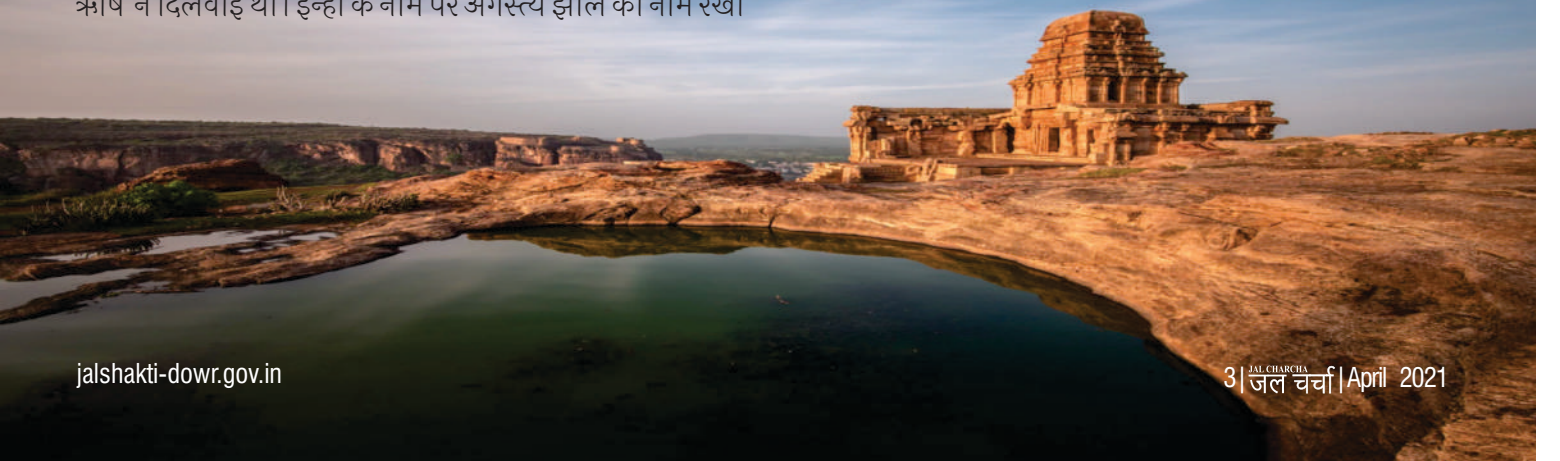
बादामी का पौराणिक नाम वातापी था व इसका नाम बाद में बदलकर 'बादामी' रखा गया था। इस जगह की आतापी व वातापी नामक दो दैत्य भाइयों की कहानी प्रचलित है जिनके अत्याचारों से मुक्ति सप्तऋषियों में से एक और वशिष्ठ मुनि के बड़े भाई 'अगस्त्य ऋषि' ने दिलवाई थी। इन्हीं के नाम पर अगस्त्य झील का नाम रखा

गया है। बादामी 540 ईस्वी से लेकर 757 ईस्वी तक चालुक्य वंश की राजधानी रही है। उन्होंने ही यहाँ पर बादामी किले व भव्य मंदिरों का निर्माण भी करवाया था।

ऐसा माना जाता है कि इस झील का निर्माण 5वीं शताब्दी में जल एकत्रित करने के उद्देश्य से करवाया गया था। यह शहर के बाहरी तरफ स्थित है और बादामी बस स्टॉप से केवल एक किलोमीटर ही दूर है। यह भी माना जाता है कि इस झील के जल में चमत्कारी औषधीय शक्तियाँ मौजूद हैं जिनसे त्वचा संबंधी समस्याएं खत्म होती हैं। स्थानीय लोगों का तो यह भी मानना है कि यह झील इतनी पवित्र है कि इसमें डुबकी लगाने से पापों से भी मुक्ति मिलती है।

इस झील के पूर्वी किनारे पर सुप्रसिद्ध भूतनाथ मंदिरों का समूह स्थित है। इसके दक्षिण-पश्चिम किनारे पर बादामी गुफाओं के मंदिर स्थित हैं। इस झील के चारों तरफ सीढ़ियाँ बनाई गई हैं जिनकी सहायता से जल तक पहुंचना सुगम हो जाता है। सालभर यह झील पानी से लबालब रहती है और यहाँ से सभी ऐतिहासिक स्मारकों व खूबसूरत पहाड़ियों का दृश्य सुरम्य और मनमोहक लगता है।

यह तैराकी के लिए भी आदर्श स्थान है। स्थानीय लोग यहाँ गर्मी से राहत पाने व अपना खाली समय व्यतीत करने भी आते हैं। सुंदर पहाड़ियों व ऐतिहासिक गुफाओं के बीच आप ढेर सारी फोटो खींच सकते हैं। यह आपकी व्यस्त 'सिटी लाइफ' के बीच एक 'एस्केप' भी हो सकता है। हम आपको यही सलाह देंगे कि आप यहाँ अवश्य घूमने जाएं और अद्भुत जल संरक्षण परंपरा को देखकर खूब प्रेरित भी हों।



कोयना नदी



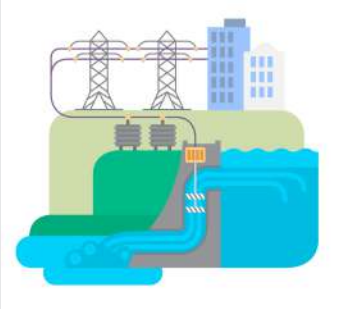
उद्गम
महाबलेश्वर जिला सतारा, महाराष्ट्र

कोयना- महाराष्ट्र की जीवनधारा



कोयना नदी के कैचमेंट में 5,000 मिमी से अधिक की औसत वर्षा होती है।

कोयना जल-विद्युत परियोजना



देश की सबसे बड़ी जल-विद्युत परियोजना

कोयना नदी



कराड तालुका
सतना जिला महाराष्ट्र

कृष्णा नदी

कोयना नदी कृष्णा नदी की एक सहायक नदी है जिसकी स्वयं की चार सहायक नदियां हैं - नामतः केरा, वाण, मोर्णा और माहिंद। ये सारी नदियां कृष्णा नदी की ही तरह पश्चिमी घाट से ही निकलती हैं। कोयना नदी बेसिन समुद्रतल से 550 - 1,460 मीटर की ऊंचाई के बीच स्थित है जिसका विस्तार 2,036 वर्ग किमी कमी है। यह नदी अपनी जलविद्युत परियोजना के कारण इलाके के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।



Coimbatore Caught the Rain, Rejoiced!

Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi launched the 'Catch the Rain' campaign on 22nd March, on the occasion of World Water Day, and urged people in rural as well as urban areas to welcome the monsoons as one welcomes a guest and harvest as much water as one can. The PM also exhorted for exclusive use of MGNREGA funds for such activities. There is no dearth of examples to show how effective rainwater harvesting has brought regions out of their water scarcity by recharging aquifers, increasing base flows and restoring water bodies. In this edition, we share with you a success story of Coimbatore district where rainwater harvesting undertaken through MGNREGA remarkably improved the alarming groundwater situation in the entire region.

Located in the northwestern part of Tamil Nadu, Coimbatore district overexploited its groundwater resources in developmental activities so much so that in 213 gram panchayats out of 228, the situation became grim. The groundwater levels in the remaining 15 also reached semi-critical levels. As a direct consequence, the average rainfall in the district declined from 690 mm to 616 mm, putting water resource in the region under extreme stress. Due to scarcity of water, the availability of water for domestic and irrigation purposes shrunk alarmingly. At this point, the district administration and gram panchayats decided to start harvesting rainwater through earthen bunds to bring the region out of its peril. The pieces of land belonging to small and marginal farmers were picked up first under MGNREGA. Gram

panchayats were given the responsibility to implement the project with technical support of the District Rural Development Agency. The project was undertaken from 2017-19 at a total cost of Rs. 47 crores.

In all, 7,174 earthen bunding projects were approved by the District Rural Development Agency for small and marginal farmers spanning 228 gram panchayats. Initially, the farmers didn't agree to take up earthen bunding work on their lands. However, through extensive deliberations in Gram Sabha in the village panchayat, all the marginal and small farmers were convinced and motivated to take up this project in their lands.

The project was implemented on the land of 7,550 farmers covering an area of 24,160 acres. Approximately, 6,764 crore litres (2.4 TMC) of water is harvested every year, which has helped in the recharging of the aquifers. After the implementation of the earthen bunding project, the groundwater table in Coimbatore district has also risen considerably. As per the State Government's reports, the groundwater levels were recorded at depths of 29.76 m, 22.31 m and 17.62 m during the years 2017, 2018 and 2019 respectively.

Shri Palani Muthu, one of the beneficiaries of the project said: "We have again started to use the groundwater which had become out of bounds. This has enabled us to expand the area under cultivation."



Rejuvenation of Kaveri River in Khandwa

A tributary of River Narmada, Kaveri flows through 3 blocks of Khandwa district in Madhya Pradesh for 54 kilometers. The catchment area of the river in the district comprises 53 micro watersheds spread over 51 villages and 35 Gram Panchayats.

Once a perennial river, River Kaveri dried up in some patches in the region due to overexploitation of groundwater (78.11% in Chegaon Makhan, 61.09% in Khandwa and 28.86% in Punasa) and excessive surface run-offs (nearly 42%). The unchecked flow of small streams originating in the monsoon seasons led to widespread soil erosion deteriorating soil quality and lowering agricultural output.



Pond work under Krishna Rejuvenation Project 2019-20



Pond work under Krishna Rejuvenation 2019-20

To address this situation, the district administration launched 'Rejuvenation of Kaveri' project in 2019-20 based on ridge-to-valley approach. Funds from MGNREGA were used.

Adopting a community-based participatory approach, survey of micro watersheds in the catchment was conducted. On the basis of the survey's results, several water harvesting structures were constructed in a span of 8 months, as shown in the table. One of the major objectives of the work was to enable percolation of water into aquifers for improvement in the groundwater levels. A massive afforestation drive was conducted as part of which 2.64 lakh trees were planted in 423 hectares of the River's catchment area. These efforts were supplemented by awareness drives on solid waste management, waste water management, utilization of grey water for kitchen garden, flushing toilets etc. To reduce groundwater contamination, farmers were urged to adhere to organic farming.

Impact

River Kaveri has 21 tributaries across its total length of 54 km. The river flow length which was 15 km before the work increased to 25 km between village Atoot Khas and

Ghohalgaon villages of Punasa block. In the remaining stretch of Khandwa and Chegaon Makhan blocks, the dry patches were revived and the sub-surface flow increased. As a direct consequence, the groundwater table rose by 425 mm when measured in August 2020 and the water storage capacity went up to 769 million hectares from 534 million hectares. The irrigation potential increased by 1025 hectares. Not only the efforts resulted in improvement in cropping intensity, vegetation in grazing field, per capita income of farmers, horticulture etc., they also ensured availability of fresh drinking water throughout the year in schools, Anganwadi Centres, Panchayat Bhawans etc. For their achievement, Khandwa district was

given the first prize in Aspirational District for River Revival category at the 2nd National Water Awards.

Name of the Structure	Number of Water Conservation Structures Made
Staggered Contour Trenches	58
Check Dams	60
Stop Dams	44
Loose Boulder Structure	244
Gabion Structures	36
Gully Plugs	15
Farm Ponds	17
Percolation Tanks	69
Tanks	15
Soak Pits	50
Dug Well Recharge Pit	10
Dykes	12
Nala Extension	60

जल योद्धा - अक्षय अग्रवाल

जल योद्धा नामक लेखों की श्रृंखला में हम आपके साथ हर महीने अलग - अलग 'वॉटर वॉरियर' यानी ऐसे लोगों की कहानियाँ साझा करते हैं जो जल संरक्षण के क्षेत्र में अद्भुत व अद्वितीय कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में हम आपको इस अंक में जल योद्धा 'अक्षय अग्रवाल' के बारे में बता रहे हैं। जल संरक्षण के अभियान को यदि सफल करना है तो उसके लिए वर्षा जल संचयन करना अनिवार्य है। वर्षा जल प्रकृति की एक भेंट है और यह प्रत्येक मनुष्य का दायित्व है कि वह इस जल का विवेकपूर्ण उपयोग करे। विवेकपूर्ण उपयोग का पहला कदम है, इस जल को संचित करना! वर्षा जल को संचित करने और इसका संरक्षण का यही संदेश जन - जन तक पहुँचा रहे हैं अक्षय अग्रवाल।

अक्षय अग्रवाल एस.आर.के. मेटल्स एंड प्लास्टिक प्राइवेट लिमिटेड नामक एक कंपनी चलाते हैं। वह पिछले 8 सालों से वर्षा जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्यरत हैं और मुख्यतः असम राज्य में जल संरक्षण का कार्य करते हैं। अक्षय बताते हैं कि जल संरक्षण के बारे में उन्होंने पहली बार गंभीरता से वर्ष 2012 में सोचा था। तब वे दिल्ली सरकार के साथ मिलकर एक वर्षा जल संरक्षण प्रोजेक्ट पर काम कर रहे थे। उनको तब यह विचार आया कि यदि सभी लोग ऐसे जल संरक्षित करें तो यह जल संकट की पूरी परिस्थिति को बदल सकता है। तभी से अक्षय ने वर्षा जल संचयन व पुनर्भरण के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर काम करना शुरू किया।

अक्षय ने अभी तक पूरे पूर्वोत्तर भारत में 1000 से भी अधिक वर्षा जल संचयन संरचनाओं की स्थापना की है। इनमें से लगभग 700 संरचनाएँ सरकारी स्कूलों, पंचायत या ब्लॉक के दफ्तरों व अन्य सरकारी इमारतों पर बनाई गई हैं। इनके अतिरिक्त सीमा सुरक्षा बल, असम राइफल्स, सशस्त्र सीमा बल, इंडियन ऑयल कारपोरेशन लिमिटेड व राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान इत्यादि की इमारतों में भी जल संरक्षण प्रणाली विकसित की गई है। इनके द्वारा बनाई गई जल संरक्षण संरचनाओं की कुल भंडारण क्षमता 71 लाख लीटर व इनकी सहायता से 4.83 करोड़ लीटर जल का संरक्षण किया गया है।

ऐसे कई पहाड़ी इलाकों में भी इन्होंने वर्षा जल संरक्षण का कार्य किया है जहाँ पाइप वाला पानी भी उपलब्ध नहीं था। इन इलाकों के लोग वर्षा जल संरक्षण संरचनाओं से लाभान्वित हुए हैं। वह केवल वर्षा जल संचयन के लिए संरचनाएँ निर्मित नहीं करते बल्कि इसके बारे में आम लोगों को जागरूक भी करते हैं। अक्षय बताते हैं कि लोगों का जल संरक्षण के विषय पर बात करते हुए पहला सवाल ही यह होता है कि 'मैं जल संरक्षण क्यों करूँ?' इन्हीं बातों को ले कर अक्षय उन्हें जागरूक करते हैं। अक्षय यह भी कहते हैं कि

हमारे देश में पानी बहुत सस्ता है और इसलिए लोग इसका दुरुपयोग भी बहुत करते हैं। ये अपने फेसबुक पेज और वेबसाइट के माध्यम से लोगों को जल संरक्षण सिखाते हैं और बताते हैं कि कैसे एक व्यक्ति स्वयं भी जल संरक्षण कर सकता है।

अक्षय बताते हैं कि उनके क्षेत्र में भूजल स्तर गिरता जा रहा है। लगभग 1200 फ़ीट पर जल उपलब्ध है और इसी कारण अधिकतर लोग पानी के लिए टैंकर पर आश्रित रहते हैं। भूजल स्तर को बेहतर करने के लिए ये भूजल पुनर्भरण प्रणाली भी बना रहे हैं और सभी सरकारी इमारतों व अन्य जगहों के बोरवेल पर इसे विकसित करने की सलाह दी जा रही है।

अक्षय कहते हैं कि जल संरक्षण का पहला कदम है अपने जल के स्रोतों को जानना और इसलिए वे सभी लोगों को यह संदेश देना चाहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति

को अपने जल का स्रोत पता होना चाहिए, उसे यह पता होना चाहिए कि उसके घर के नल में पानी कहाँ से आ रहा है और घर का अपशिष्ट जल कहाँ जा रहा है। हमें जल संसाधनों के प्रति अपनी जागरूकता बढ़ानी होगी। हम जागरूक होंगे तभी जल संरक्षण कर पाएँगे। हमें आशा है कि आपको जल योद्धा अक्षय अग्रवाल की जल संरक्षण की कहानी पसंद आएगी व आप इनके इस मंत्र को जरूर अपना कर खुद भी जल योद्धा बनेंगे।





उजनी बांध

1969 निर्माण काल 1980

123 किमी
लंबाई
व **109**
क्युमेक डिस्चार्ज

112 किमी
लंबाई
व **42.5**
क्युमेक डिस्चार्ज

- ⚡ बिजली उत्पादन
- 🌳 सिंचाई
- 💧 उद्योग-जल आपूर्ति
- 🚰 पेयजल

↑
56.4 मी
(नींव के स्तर से
बांध की ऊंचाई)
↓

कुल 41 स्पिलवे गेट

📍 उजनी गांव,
माधा तालुका,
जिला सोलापुर, महाराष्ट्र

नहर

नहर

कुल
सिंचित कमांड
क्षेत्र : **239,600**

23rd and 24th Water Talks

Two 'Water Talks' were organized in the month of March on virtual platform. Shri Pankaj Kumar, Secretary, Ministry of Jal Shakti, Sh. G. Asok Kumar, Additional Secretary & Mission Director, NWM, officials of Do WR, RD & GR, officers from other organizations participated in the Talks. The events engaged 5,000 viewers on social media platforms.

The 23rd Water Talk was organized on 5th March 2021 and was delivered by Shri Divyang Waghela, Head- Tata Water Mission. The topic of the e-talk was 'Water Security through Springshed Management in the Indian Himalayan Region'. Shri Waghela spoke about how the north-eastern states of the country are dependent on springs as a water source for their sustenance. Springs form the backbone of communities living in Leh, Ladakh and other North-Eastern states of the country. Spring water is used for drinking purposes as well as agriculture purposes. From an ecological perspective, a substantial amount of about 24% of surface flow irrigation systems is based out of springs in the Himalayan Region.



There are about three million springs in the Himalayan region which support the lives and livelihoods of 60-70% of the population of the area. According to a Niti Aayog report, nearly half of the perennial springs have already dried up or have become seasonal and flow only during the monsoon. Discharge of springs has gone down substantially directly impacting the people socially and economically. There are multiple dimensions to Springs with climate playing a critical role in terms of reducing its base flow. Another reason could be attributed to change in land use pattern and land cover. The change in seismicity also has a direct impact on geological formation and impacts the availability of water in springsheds.

Shri Waghela argued that Springs need to be viewed in the context of groundwater and are as important a source as wells or bore-wells. Springs in the Himalayan Region provide the base flow for rivers and groundwater recharge. Just as plenty of public and private investment goes into well charging, similar investment is required to be made in springshed management going forward.

The Speaker stressed that springshed management is the need-of-the-hour and must be undertaken through convergent efforts from the central and

state governments, NGOs and academic institutions to collectively develop action research programmes and technological interventions to address the challenges.

The 24th Water Talk was organized on 19th March 2021 and was delivered by Shri Ravindra Desai, Director (Operations), Govt. & Corporate Relationships, Art of Living's River Rejuvenation Projects. The topic of the e-talk was 'River Rejuvenation at Art of Living'. The Speaker shared the organization's revolutionary project- 'The River Rejuvenation Project' that was launched for reviving lost rivers in various parts of India and other water bodies such as ponds, wells, canals, and temple tanks.



'The River Rejuvenation Project' started in 2013 aimed to provide a long-term and lasting solution. Under this project, at least 43 rivers in four states (Maharashtra, Karnataka, Tamil Nadu and Kerala) have been revived, benefitting more than 7 million people in about 5000

villages. The Art of Living devised a three-pronged approach for its river projects that were both community-driven and sustainable in nature. Some of the major activities included de-silting of rivers, construction of water pools and tree plantation. This has led to improvement in groundwater levels and employment generation in the regions.

The Speaker insisted that the success of the project could be attributed to the dedicated team of subject matter experts involved, community mobilisers, and administrative support from IT professionals and youth leaders. Understanding the local community's livelihoods and needs played a key role in devising strategies for ensuring participation from the community and perpetuate holistic development.

लातूर शहर नगर निगम

भारत के संदर्भ में जल संकट पर बात करते हुए सबसे पहले लातूर का नाम मस्तिष्क में आता है। इस नाम से अवश्य ही आप भी परिचित होंगे। इस जगह के जल संकट ने देशभर की जनता को जल संरक्षण का संदेश दिया था। आपको यह जानकर विश्वास नहीं होगा कि लातूर का जल संरक्षण इतना बेहतरीन है कि इसे जल शक्ति मंत्रालय द्वारा भी सराहा गया है। मंत्रालय के राष्ट्रीय जल पुरस्कारों की शहरीय स्थानीय निकाय श्रेणी में इसे सम्मानित किया गया है। जल चर्चा के इस संस्करण में हम आपको लातूर के जल संकट से बाहर आने की कहानी बता रहे हैं, तो आइए जानते हैं आखिर क्या है लातूर शहर नगर निगम का जल संरक्षण मॉडल।

लातूर महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण शहर है जो धीरे-धीरे शिक्षा, उद्योग व व्यावसायिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में उभर रहा है। लातूर शहर नगर निगम की आबादी वर्ष 2011 में 3,82,000 थी जो अब 5.5 लाख से भी अधिक अनुमानित है। तेजी से बढ़ती इस आबादी के साथ क्षेत्र की जल की मांग भी तेजी से बढ़ रही है। लातूर शहर सूखा प्रवृत्त क्षेत्रों की श्रेणी में आता था व यहाँ जल का मुख्य स्रोत वर्षा ही थी। मंजारा, तेरना, तवराजा और धारनी इस क्षेत्र की मुख्य नदियाँ हैं व जल का प्रमुख स्रोत हैं, परंतु इनमें से कोई भी नदी बारहमासी नहीं है। ये सभी नदियाँ भी वर्षा पर ही आश्रित हैं। बीते कुछ वर्षों के आँकड़ों पर गौर किया जाए तो हम यह पाते हैं कि इस क्षेत्र में वर्षा देरी से होती है व सितंबर-अक्टूबर के अंत में कहीं जा कर यहाँ के बांधों का जल स्तर बढ़ पाता है। इस कारण जब भी वर्षा अच्छी न हो इस क्षेत्र के लोगों को सूखे का सामना करना पड़ता है और पहले ऐसी परिस्थिति हर 3-4 साल में उत्पन्न होती रहती थी।

वर्ष 2016 में लातूर शहर ने भयानक सूखे का सामना किया। बहुत कम वर्षा होने के कारण यहाँ की नदियाँ व बांध सूखे रहे और यहाँ के लोग जल की एक-एक बूंद के लिए भी तरस गए। इस परिस्थिति में भारतीय रेल के जरिए सांगली जिले के मिराज से लातूर तक जल पहुँचाया गया। अब लातूर के लिए उनका नया जल स्रोत 400 किलोमीटर दूर था। यह पहली बार था जब किसी ने 'जल ट्रेन' अवधारणा के बारे में जाना और देश भर में यह चर्चा का एक विषय बन गया। इस वर्ष में अप्रैल से लेकर जुलाई तक जल इस जल ट्रेन के माध्यम से ही पहुँचाया गया।

वर्षा का अभाव होने के बावजूद भी इस क्षेत्र में भूजल स्तर काफी संतोषजनक है। इसी को ध्यान में रखते हुए भूजल का प्रयोग करने के लिए पिछले वर्षों में यहाँ

1461 ऑड बोरेवेल की स्थापना की गई है। वर्तमान में यहाँ 950 बिजली संचालित पंप हैं। भूजल भी एक सीमित संसाधन है इसलिए यहाँ और नए हैंड पंप लगाने पर जोर देने की बजाए लोगों को पुराने बोरेवेल इत्यादि को पुनर्जीवित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। भूजल पुनर्भरण तकनीकों से इन्हें रीचार्ज भी किया जा रहा है। यहाँ लगभग 3.5 मिलियन लीटर प्रतिदिन की आपूर्ति इन बोरेवेल व बिजली संचालित पंप द्वारा ही की जाती है। इन बोरेवेल के पास में ही प्रीकास्ट सीमेंट टैंक व स्टैंड पोस्ट भी बनाए गए हैं। इनके माध्यम से जल को संग्रहित किया जाता है ताकि लोग दिन-रात कभी भी आकर अपनी सुविधानुसार जल ले सकें।



कुँए के जल को वाष्पीकरण से बचाने की संरचना



शहरवासियों से गणेश प्रतिमाएं एकत्रित करने का एक केंद्र

इन बोरेवेल में सही भूजल स्तर बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि स्थानीय जल निकायों में जल भंडारण की क्षमता विकसित की जाए। इसके लिए शहर में कुआँ व अन्य जल निकायों से गाद निकालने व इनके गहरीकरण का काम शुरू किया गया। अच्छी वर्षा होने पर ये जल निकाय जल ग्रहण में सफल होते हैं। लातूर शहर नगर निगम की परियोजना के अनुसार हर वार्ड में ऐसा एक कुआँ बनाया जाएगा जिससे 2 मिलियन लीटर जल प्रतिदिन उपलब्ध कराया जा सके।

शहर में भूजल को संरक्षित करने के लिए जल पुनर्भरण अभियान चलाया जा रहा है। शहर के हरित क्षेत्रों में वर्षा जल पुनर्भरण के लिए डग पिट बनाए गए हैं। इन प्रयासों से जल स्तर काफी बेहतर हुआ है। इसके अतिरिक्त यहाँ नागरिकों को भी जल संरक्षण के लिए प्रेरित किया जा रहा है व जो लोग अपने घरों में वर्षा जल संचयन कर

रहे हैं उन्हें संपत्ति कर में 5% तक की छूट दी जाती है। नए निर्माण से पहले व्यक्ति को जल संरक्षण की व्यवस्था हेतु वचन पत्र देना अनिवार्य है। शहरीय परिसर में नगर निगम के 38 भवन में जल संरक्षण तकनीकों को स्थापित किया गया है।

इन सभी प्रयासों के अतिरिक्त और भी कई माध्यमों से जल संरक्षण किया जा रहा है। इस क्षेत्र में पहली बार ही ऐसा हुआ कि गणपति पूजा में किसी भी व्यक्ति ने भगवान गणपति की मूर्ति का विसर्जन नहीं किया बल्कि शहर के लोगों द्वारा 30,000 मूर्तियों के रीसाईकल के उद्देश्य से दान किया गया। इस कारण लगभग 20 एमएलडी जल का संरक्षण किया गया। लातूर शहर नगर निगम द्वारा उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए बेहतरीन जल प्रबंधन और जल संरक्षण किया गया है। जल शक्ति मंत्रालय लातूर शहर नगर निगम प्रशासन व सभी क्षेत्रवासियों को इन उपलब्धियों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता है।

DD Builders and DD Enviro Engineering

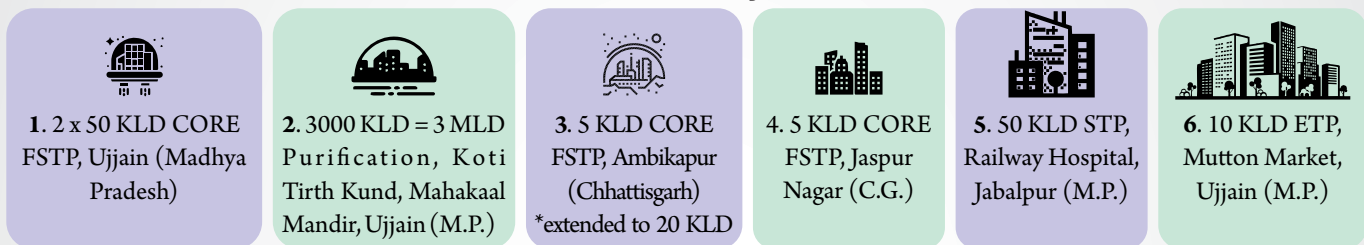
The conventional method to treat faecal sludge is to decompose it for manure-production. But DD Builders and DD Enviro Engineering has turned to an advanced and superior technology, turning faecal sludge into reusable water, thereby producing best output and minimal wastage. This method is a hybrid mixture of old and new methods, i.e. which is why it is termed as hybrid CORE FSTP.



Work Done in Treatment Plants (FSTP, ETP & STP) (2017 – 2019):

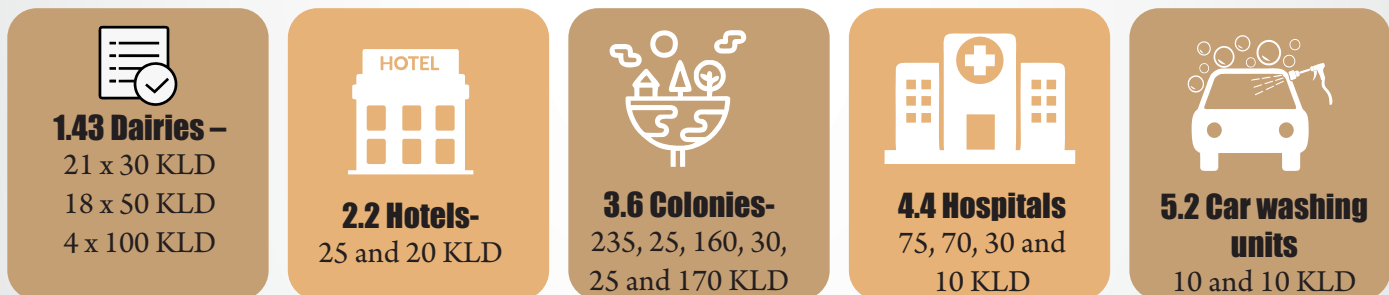
(No. of people daily affected= data)

Government Projects



Total waste-water treated in all government projects= **3185 KLD (= 3.185 MLD)**

Private Projects



Total waste-water treated in all private projects= **2825 KLD (=2.825 MLD)**

Overall waste-water treated = **6010 KLD (=6.010 MLD)**

Total people directly affected = **7,86,600 everyday**

Benefits

1. Costs less than most technologies
2. Very low maintenance cost (3.00 INR per capita)
3. Uses low electricity, (EB connection < 5 kW “III Phase”)
4. No odour after first stage treatment
5. Can be installed and commissioned in a matter of time

Results of CORE FSTP Plant

1. 2nd most hygienic city in India is Ambikapur. (ODF++)
2. 4th most hygienic city in India is Ujjain. (ODF++)



PM Launched 'Jal Shakti Abhiyan: Catch The Rain' Campaign on the occasion of World Water Day

Union Minister of Jal Shakti Signed Historic Agreement for Ken-Betwa Link Project with Chief Ministers of Uttar Pradesh and Madhya Pradesh

Prime Minister, Shri Narendra Modi launched the 'Jal Shakti Abhiyan: Catch the Rain' campaign on the occasion of World Water Day through video conferencing on 22nd March 2021. A historic Memorandum of Agreement was also signed between the Union Minister of Jal Shakti and the Chief Ministers of Madhya Pradesh and Uttar Pradesh, in the presence of the Prime Minister, to implement the Ken Betwa Link Project, the first project of the National Perspective Plan for interlinking of rivers. Prime Minister also interacted with sarpanches and ward panches from Rajasthan, Uttarakhand, Karnataka, Maharashtra and Gujarat.

Speaking on the occasion, the Prime Minister said that on International Water Day, a major step has been taken for the Ken-Betwa Link Canal along with the introduction of the Catch the Rain campaign. He added that the agreement is important to realize the vision and dream of Bharat Ratna Shri Atal Bihari Vajpayee for interlinking of rivers. He said that this agreement will be in the interest of millions of families of Uttar Pradesh and Madhya Pradesh living in the Bundelkhand region. PM asserted that rapid development is not possible without water security and effective water management. He added that the vision of India's development and self-reliance is dependent on our water sources and our water connectivity.

Prime Minister noted that the challenge of the adequate availability of water is increasing in proportion to India's development. He said it is the responsibility of the present generation of the country to fulfill its responsibility for the generations to come. He asserted that the government has made water governance a priority in its policies and decisions. In the last 6 years, many steps have been taken in this direction. He talked about Pradhan Mantri Krishi Sinchai Yojna, 'Har Khet ko Paani', 'Per Drop More Crop' campaign, Namami Gange Programme, Jal Jeevan Mission and Atal Bhujal Yojana.

The Prime Minister pointed out that the better India manages rainwater, the lesser will be the country's dependence on groundwater. Therefore, success of campaigns like 'Catch the Rain' is very important. He noted that both urban and rural areas have been included in the Jal Shakti Abhiyan. He called upon to step up water conservation efforts in the days leading up to monsoon. Emphasizing on the importance of sarpanches and DMs/DCs, the Prime Minister said that the 'Jal Shapath' which is being taken all over the country should be administered to everyone. He said when our nature changes with respect to water, nature will also support us.

The Prime Minister noted that apart from rain water harvesting, the management of river water in our country has also been discussed for decades. To save the country from a water crisis, it is crucial to work rapidly in this direction. He said the Ken-Betwa Link Project is also part of this vision. He lauded both the State Governments of Uttar Pradesh and Madhya Pradesh for making this project a reality.

The Prime Minister said that 1.5 years ago, only 3.5 crore out of 19 crore rural families in our country got piped drinking water. But after the launch of Jal Jeevan Mission, about 4 crore new families have piped drinking water connections in such a short time. He noted that public participation and local governance model are at the core of the Jal Jeevan Mission.

The Prime Minister remarked that for the first time after independence, a government is working so seriously with regard to water testing. He pointed out that our sisters and daughters in rural regions have been made stakeholders in this campaign of water testing. During the COVID-19 period itself, about 4.5 lakh women were trained for water testing. Every village is getting at least 5 trained women for water testing. Better results are a certainty with increased participation of women in water governance, the Prime Minister concluded.

Addressing the event, Union Minister for Jal Shakti Shri Gajendra Singh Shekhawat said that today is a historic day which shall be etched in golden letters in the history of water management in India. Shri Shekhawat said that the consensus for Ken Betwa Link Project has been achieved through positive intervention of the central government which is working relentlessly under the dynamic leadership of Prime Minister Shri Narendra Modi in the field of water management. The signing of MoU shall pave the way for country's first ever interlinking of river project. The agreement is exemplary for other States to follow and truly upholds the tenets of cooperative federalism.

Shri Shekhawat said that the country-wide Jal Shakti Abhiyan "Catch the rain when it falls, where it falls" launched by PM aims at nudging the government authorities as well as the general public to create capacities for tapping rain water.

He said that all these measures being taken by the Union Government reflect the seriousness it accords to integrated water management in the country.

Speaking on the sidelines, the Minister of State for Jal Shakti Shri Rattan Lal Kataria said that the dream of our ex-Prime Minister Shri Atal Bihari Vajpayee is soon going to translate into reality. The States of UP and MP have reached an agreement on water sharing from the proposed Ken-Betwa Interlinking of river project. He congratulated the States, National Water Development Authority and all the officials of Jal Shakti Ministry for their sincerity and dedication in implementing this ambitious scheme. Moreover, Andaman and Nicobar has declared itself as the 3rd State/UT to have achieved 100% target of providing functional household tap water under the Jal Jeevan Mission, he added.

Yogi Adityanath, the Chief Minister of Uttar Pradesh and Shri Shivraj Singh Chauhan, Chief Minister of Madhya Pradesh participated in the event via video conferencing. Shri Pankaj Kumar, Secretary, Ministry of Jal Shakti, Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, National Mission for Clean Ganga, Smt. Debashree Mukherjee, Additional Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Shri G. Asok Kumar, Additional Secretary and Managing Director, National Water Mission along with other dignitaries were also present on the occasion.



World Water Day Activities

Since 1993, World Water Day is being observed on 22nd March every year to underline the importance of water for our world. Emphasizing water crises around the world, this day is a reminder to all of us how important water conservation and management is for the sustainable future of humanity. The Department of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti and its sub-ordinate offices across India celebrated World Water Day with much enthusiasm. The officials and staff of the offices pledged to save water in offices and homes, planted saplings and engaged in cleanliness drives across the country.



The officials and staff of the Central Ground Water Board, CHQ, Faridabad were administered the World Water Day Pledge and sensitized about the role of every individual in its conservation and management.



Water Pledge was administered by Chairman, Central Water Commission to the officials at the CWC HQ, New Delhi, emphasizing the importance of water conservation and management.



Brahmaputra & Barak Basin Organization, Shillong put up a CWC stall at the exhibition organized by PHE, Govt. of Meghalaya to showcase the range of activities undertaken by CWC in the region.



On the occasion of World Water Day, Neer Foundation organised an award ceremony at NMCG office. Sh. Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG along with Sh. Ashok Kumar Singh, ED (P), NMCG distributed prize to Sh. Sachchidanand Bharti and Sh. Arvind Chaturvedi, Editor.



Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG administered the water conservation pledge to NMCG officials on the occasion of World Water Day.

World Water Day Observed with Much Fervour by NMCG. NMCG Interacts with Stakeholders to Spread the Message of 'Valuing Water'

UNESCO and NMCG Celebrate World Water Day with Children

UNESCO and NMCG organized a hybrid event with school children and teachers to celebrate 'World Water Day 2021' during which the winners of a water conservation awareness programme were felicitated and winning animation short films were screened. UNESCO had launched this programme nation-wide last September for school children in India, in partnership with the National Mission for Clean Ganga, the United Schools Organization (USO), Water Digest and India-based global animation major Toonz Media Group. Entitled "H2Ooooh! – Waterwise program for children of India", this innovative initiative encouraged school students between the age of 6-14 years to submit story ideas for animated short films to raise awareness on water conservation and its sustainable use. As many as 93 shortlisted students, including eight children with disabilities, underwent a training in basics of 2D animation including script writing, character sketching and storyboarding by Toonz Animation mentors as part of the programme. The students had been shortlisted after multiple screenings from over 17,000 participants from 43 schools across the country. Mr. Eric Falt, UNESCO New Delhi Director thanked all the partners in collectively carrying out the unique initiative to make children aware of the importance of water. Shri Rajiv Ranjan Mishra also expressed his gratitude for UNESCO and wished all young friends the very best in developing the wisdom to manage water better.



UNESCO and NMCG Officials with selected students from schools across the country

Ganga Quest 2.0 Launched at UNESCO Event

Ganga Quest 2021, an online competitive quiz organised by the National Mission for Clean Ganga (NMCG) and TREE Craze Foundation, was also launched at the event. The online competition conceptualised in 2019, garnered a stupendous response from students of all ages. As many as 11.5 lakh had participated in the Ganga Quest 2020. "Public participation is one of the prime focus areas of the Namami Gange Mission. This quiz will encourage everyone to learn more about our rivers and to respect them," said Rajiv Ranjan Mishra. After getting an excellent response with respect to registrations, the quiz went live on 7th April.

NAMAMI GANGE



DG, NMCG Participates in National Seminar by IGNOU

On the occasion of World Water Day, Indira Gandhi National Open University's School of Interdisciplinary and trans-disciplinary Studies organized a 'National Seminar on Valuing Water'. Professor Nageshwar Rao, Vice-Chancellor, IGNOU, chaired the session and emphasised on the judicious use of this scarce natural resource and highlighted the role of IGNOU in creating awareness in conserving water through its vast network of regional centres and study centres. Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, National Mission on Clean Ganga, was the chief guest of the Seminar. He highlighted the major achievements of the NMCG and briefed everyone about the 'Ganga Quest' quiz competition starting next month.



DG, NMCG Participates in IIM-Sirmaur Webinar

Sh. Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG delivered a keynote address in the webinar on 'The Path Towards Sustainable

Water Management' on the occasion of World Water Day organised by CSEM & IIM Sirmaur. "We are working towards achieving sustainable water management and with Ministry's integrated approach we are achieving sustainable water management in certain areas urban and rural India. When we talk about sustainable water management, we have to talk about drinking water, safe tap water etc. because water is not just water, it includes complete ecosystem i.e. water bodies, forests, wetlands etc."- Sh. Rajiv Ranjan Mishra said.

DG, NMCG Participates in Valedictory Session of Online Training on Wastewater by TERI

On the occasion of World Water Day, Sh. Rajiv Ranjan Mishra, DG-NMCG, addressed the audience at the valedictory session of Online Training and Capacity Building (OTCB) Certificate Programme: Developing Treated Wastewater Reuse Facilities organised by TERI - The Energy and Resources Institute. "We must welcome the rain with full preparation. All societies, all people should be ready to store and cherish the rainwater by preparing water bodies and specific spots to store the rainwater, where it falls. We must sensitize ourselves towards water management and we must work towards protecting and utilising the water in a more sustainable way. It is for us to ensure that we conserve and utilise water in a more sustainable way," Sh. Rajiv Ranjan Mishra said.



NAMAMI GANGE



Shri Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister for Jal Shakti addressed the audience at UNESCO's H2OoooH! Initiative in making school children water-wise. The event marked the celebration of World Water Day. Children were invited to make engaging and thought provoking animation on the 'Value' of water.



The High-Level Joint Working Group Meeting on Water Cooperation & EU in India partnership was held on 31st March 2021. The meeting was attended by Sh. Ashok Kumar Singh, ED, Projects, NMCG who gave a presentation on Namami Gange.



Dr. Omkar Rai, DG, Software Technological Park of India visited the Namami Gange pavilion at the 6th Smart Cities India expo and appreciated the work being done by NMCG for Ganga and its tributaries.



Financing agreements were signed for developing STPs and sewage network for Digha and Kankarbagh, Patna in the presence of Sh. Pankaj Kumar, Secretary, Ministry of Jal Shakti and Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG. Sh. Raman, MD, BUIDCO, Sh. Vardarajan, VA Tech WABAG and Sh. Pawan Singh, Managing Director, Power Trading Corporation, India Financial Services were also present.



नमामि गंगे के महानिदेशक श्री राजीव रंजन मिश्रा भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री वैकैया नायडू जी को 'रोइंग डाउन द गैजेज़' पुस्तक भेंट करते हुए।



Sh. Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG inaugurated the Namami Gange pavilion at the 6th Smart Cities India Expo.



Shri Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister for Jal Shakti chaired the 7th Meeting of Empowered Task Force Committee along with Sh. Rattan Lal Kataria, Minister of State for Jal Shakti. Sh. Rajiv Ranjan Mishra, DG-NMCG and other senior functionaries were also present.



Sh. Rajiv Ranjan Mishra, Director General, National Mission for Clean Ganga (NMCG) chaired the 34th and 35th meetings of the Executive Committee (EC) of NMCG on 30th March and discussed various projects. The meeting was attended by Sh. Ashok Kumar Singh, ED, Projects, Sh. Rozy Agarwal, ED, Finance and other senior officials.



NMCG organized the 1st Central Monitoring Committee meeting on Protection and Rejuvenation of Waterbodies with Chief Secretaries/senior officials of States. The meeting was chaired by Sh. Pankaj Kumar, Secretary, Ministry of Jal Shakti.



नेहरु युवा केंद्र, गाज़ीपुर (उ.प्र.) द्वारा स्वच्छ गांव हरा गांव पर युवाओं का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर नेहरु युवा केंद्र संगठन के कार्यकारी निदेशक, पूर्व रेल राज्यमंत्री एवं वर्तमान उपज्यपाल जम्मू कश्मीर उपस्थित थे।

NAMAMI GANGE



Shri Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister for Jal Shakti chaired an online session on 'Framing of Policy on Resuse of Treated Water' along with Shri Rattan Lal Kataria, Minister of State for Jal Shakti. The meeting was attended by Shri Pankaj Kumar, Secretary, Jal Shakti Ministry, Shri Rajiv Ranjan Mishra DG NMCG and other officers of NMCG. The meeting was held under the aegis of India-EU Water partnership facilitated by GIZ and was also addressed by H E Mr. Ugo Astuto, EU Ambassador to India.



The 9th Central Monitoring Committee meeting with 33 States/UTs was chaired by Sh. Pankaj Kumar, Secretary, Ministry of Jal Shakti through video conference on 4th March.



Sh. Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG along with Sh. Ashok Kumar Singh, ED, Projects, NMCG and Sh. Raman Kumar, MD, BUIDCO visited Ganga Research Centre at Collectorate Ghat, audio visual theatre at Baharwa Ghat and community-cum-cultural centre at Raja Ghat in Patna.



Sh. Rajiv Ranjan Mishra, DG-NMCG along with Sh. Ashok Kumar Singh, ED, Projects signed the Concession Agreement for Moradabad STP project under Hybrid Annuity Mode.



Sh. Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG met Sh. Tarkishore Prasad, Deputy CM of Bihar, and discussed various projects under Namami Gange. He presented him the book 'Rowing Down the Ganges'.



Sh. Ashok Kumar Singh, ED, Projects, NMCG inaugurated the Saidpur STP for testing and participated in a plantation drive organized on the occasion.



नेहरू युवा केंद्र फर्रुखाबाद (यूपी) के तत्वाधान में नमामि गंगे परियोजना के तहत विश्व अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला गंगा दूतों ने गंगा स्वच्छता हेतु जागरूकता कार्यक्रम चलाया। सभी ने गंगा घाट पर स्वच्छता अभियान व गोष्ठी का आयोजन किया।



जानिए जल संरक्षण में सर्वश्रेष्ठ ग्राम पंचायत 'लेंग' के बारे में

जल शक्ति मंत्रालय द्वारा जल संरक्षण के क्षेत्र में निरंतर काम कर रहे लोगों, संस्थाओं और क्षेत्रों को सम्मानित कर उन्हें प्रोत्साहित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। जल संरक्षण की यही दिलचस्प कहानियाँ हम अपनी मासिक पत्रिका 'जल चर्चा' के माध्यम से आप तक पहुंचाते हैं। इस लेख में हम आपको 'लेंग' ग्राम पंचायत के जल संरक्षण के बारे में बता रहे हैं। लेंग गाँव मिज़ोरम के चम्फाई जिले के पूर्वी लुंगदर ब्लॉक में स्थित है। इस गाँव को जल संरक्षण हेतु 2019 में राष्ट्रीय जल पुरस्कारों में पूर्वोत्तर क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ ग्राम पंचायत श्रेणी में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

लेंग गाँव के लोगों को जल संरक्षण परंपरा वास्तविक रूप में विरासत में मिली है। इस गाँव के राजा फनाई हमेशा ही जल संरक्षण को व जल संसाधनों की साफ़ – सफाई को प्राथमिकता दिया करते थे। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि गाँव के सभी लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो। इसके लिए उन्होंने गाँव व आसपास के क्षेत्रों में सोतों के पानी के रखरखाव को महत्व दिया। राजा द्वारा हर 2 महीने के अंतराल पर सामाजिक कार्य करने के लिए अभियान आयोजित कराए जाते थे। सभी ग्रामवासी तब अपने क्षेत्र के जल संसाधनों की सफाई करते थे। इस सामाजिक कार्य में स्प्रिंगवाटर और जलग्रहण क्षेत्र इत्यादि की सफाई भी सम्मिलित है। लेंग गाँव के लोगों ने आज भी 'सामाजिक कार्य' के तहत जल संसाधनों की सफाई और संरक्षण की इस अच्छी आदत को बनाए रखा है।

आज तक, यहाँ सोतों का जल, लेंग और पड़ोसी गाँवों के लिए एक महत्वपूर्ण जल स्रोत है। क्षेत्र के लोग सूखे मौसम के दौरान धुलाई व सफाई जैसे घरेलू कार्यों के लिए इन सोतों पर ही आश्रित रहते



हैं। यहाँ तक कि कुछ सोतों को पेयजल के लिए भी चिह्नित किया गया है। इस प्राकृतिक जल का उपयोग करने के लिए कुछ शुल्क अदा करना होता है। इस राशि का इस्तेमाल इन संसाधनों के रखरखाव के लिए ही किया जाता है।

गाँव के प्रत्येक घर में 7000 लीटर की पानी की टंकी है जिसमें मानसून के दौरान पानी जमा किया जाता है। ग्रामवासियों ने जल के सतही अपवाह को बचाने के लिए ट्रेंच बनाए हैं व वृक्षारोपण पर भी ज़ोर दिया है। इस क्षेत्र में वर्ष 1979 से ही 'यंग मिज़ो एसोसिएशन' द्वारा लगभग 10 एकड़ ज़मीन पर फैले जंगल को संरक्षित किया जा रहा है ताकि जलग्रहण (catchment) क्षेत्र को बढ़ाया जा सके। इसके लिए समय-समय पर कई गैर-सरकारी संगठन, सरकारी संस्थानों के साथ मिलकर जागरूकता अभियान आयोजित करते हैं। लेंग गाँव के आसपास की लगभग 150 एकड़ भूमि वनसंवर्धन के लिए बचाई गई है। इस जंगल व यहाँ के अन्य संसाधनों की देखभाल लेंग गाँव के लोगों द्वारा ही की जाती है।

लेंग के सभी ग्रामवासी ग्राम सभा क्षेत्राधिकार के भीतर उपलब्ध जल स्रोतों के संरक्षण प्रक्रिया में सक्रिय हैं। इस जन आंदोलन से गाँव के लोगों में मौजूदा जल संसाधनों के प्रबंधन करने के प्रति जागरूकता आयी है और सामुदायिक स्तर पर एक नैतिक ज़िम्मेदारी की भावना भी जागृत हुई है। प्रकृति की एक अनमोल धरोहर 'स्प्रिंगवाटर' लेंग ग्रामवासियों के पास उपलब्ध है और इसमें कोई शक नहीं है कि ये लोग इस संसाधन की खूब भली-भाँति देखभाल कर रहे हैं। जल शक्ति मंत्रालय लेंग ग्रामवासियों व प्रशासन को उनकी उपलब्धियों के लिए पर डेर सारी शुभकामनाएं देता है।

कृषि में जल की बचत कैसे करें ?



फसलों को कितना जल देना चाहिए?

फसलों के लिए जल की आवश्यकता कई कारकों पर निर्भर करती है। मिट्टी का प्रकार, तापमान, आद्रता, फसल का प्रकार, जड़ की गहराई और फसल वृद्धि की अवस्था आदि बातों से तय होता है कि फसलों को कितना जल देना चाहिए।

फसल को जल की आवश्यकता है यह कैसे पहचानें?

मिट्टी का अनुमान : अपनी उंगलियों को जमीन में दो से तीन इंच गाड़कर मिट्टी का अनुमान लगाएं। यदि मिट्टी सूखी हो तो फसल को जल की आवश्यकता है।



पत्तियों का निरीक्षण : यदि फसल की पत्तियाँ पीली पड़ गईं, सूख गईं या उनके किनारे सूख गए हों तो समझें कि फसल को जल की आवश्यकता है।



प्रयोग करें!

दो समान क्यारियों या दो बड़े ट्रे में सब्जी या जल्दी उगने वाली कोई फसल लगाएं (धनिया या मेथी जैसी भाजी उगाना आसान है)। दोनों स्थानों पर एक ही प्रकार की मिट्टी का उपयोग करें। एक क्यारी/ट्रे में ड्रिप या मटका सिंचाई की व्यवस्था करें।

दूसरी क्यारी/ट्रे में पारंपरिक (बाढ़) सिंचाई पद्धति का उपयोग करें। पौधे की आवश्यकता के अनुसार दोनों क्यारी/ट्रे में जल दें। मापें कि हर बार आप कितना जल दे रहे हैं। दो सप्ताह बाद दोनों की तुलना करें।



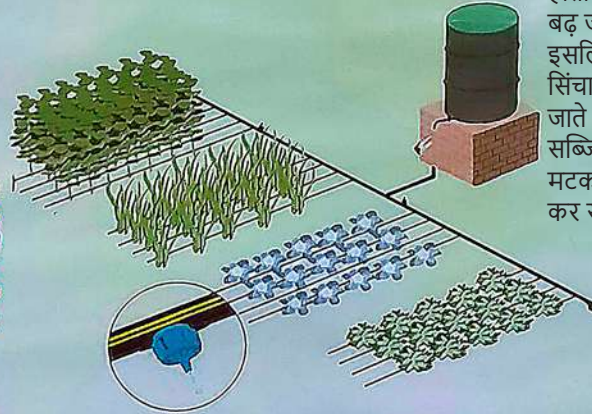
शोध करें!

- अपने क्षेत्र में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलों और सब्जियों की सूची बनाएं।
- किसानों से चर्चा करके (या इंटरनेट पर ढूंढकर) यह पता लगाएं कि किस फसल को अधिक और किस फसल को कम जल की आवश्यकता पड़ती है।
- पता लगाएं कि फसलों को कब सबसे अधिक जल की आवश्यकता पड़ती है।

फसलों की सिंचाई कैसे करें?

खेत में सीधा जल छोड़ना (बाढ़ सिंचाई) सिंचाई का अति सामान्य तरीका है। इससे बहुत सारा जल बर्बाद होता है और खेत में खरपतवार बढ़ जाती है।

इसलिए ड्रिप और स्पिंकलर सिंचाई जैसे विकल्प सुझाए जाते हैं। फलदार पौधे और सब्जियों को उगाने के लिए मटका सिंचाई का उपयोग कर सकते हैं।



यह करके देखें :

अपने क्षेत्र में पेड़ों को जल देने के लिए ड्रिप या मटका सिंचाई का उपयोग करें।





स्वच्छता पखवाड़ा: स्वच्छ भारत की दिशा में नया कदम

स्वच्छता पखवाड़ा की शुरुआत वर्ष 2016 में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में हुई थी ताकि देश में स्वच्छता के विभिन्न मसलों व उपायों पर विशेष ध्यान दिया जाए और आम-जन इन मसलों के बारे में अधिक सजग बनें। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी स्वच्छता पखवाड़ा पूरे देश में ज़ोर-शोर से मनाया गया। जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग और इसके अंतर्गत अन्य संगठनों व कार्यालयों में भी सभी कर्मचारियों ने स्वच्छता पखवाड़ा की गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया।



स्वच्छता पखवाड़ा के अवसर पर केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, जम्मू के कर्मचारियों ने पटिया केरन के बाजिन्दी तालाब की सफाई की।



केंद्रीय जल आयोग में स्वच्छता पखवाड़ा का शुभारम्भ अध्यक्ष महोदय व अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में स्वच्छता प्रतिज्ञा के साथ हुई। इसके बाद कर्मचारियों ने पुस्तकालय परिसर में पौधारोपण और अन्य स्वच्छता गतिविधियों में श्रमदान भी किया।



स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, भोपाल में कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण का कार्यक्रम संपन्न हुआ, जिसमें राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रुड़की के निदेशक डॉ० जयवीर त्यागी, डॉ० अनिल कुमार लोहानी वैज्ञानिक-जी एवं समन्वयक, क्षेत्रीय केंद्र, भोपाल द्वारा पौधारोपण किया गया।



स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत महानदी एंड इंस्टीट्यूट ऑफ वॉटर रिसर्च आर्गेनाइजेशन, केंद्रीय जल आयोग, भुवनेश्वर के अधीनस्थ कार्यालयों में तालाब की सफाई, वृक्षारोपण व अन्य गतिविधियां सफलतापूर्वक संपन्न हुईं।



स्वच्छता पखवाड़ा के अवसर पर राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रुड़की व संस्थान के विभिन्न क्षेत्रीय केन्द्रों के वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं स्वच्छता नोडल ऑफिसर डॉ० एल. एन. ठकुराल ने रुड़की के विभिन्न विद्यालयों में बच्चों को स्वच्छता की शपथ दिलाई। साथ ही चित्रकला व पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन भी हुआ।

Honda Motorcycle & Scooter India Pvt. Ltd., Ahmedabad



3rd Prize,
Large Scale Industries category,
National Water Awards 2018



**Installation of Rain Water
Harvesting System of Capacity –
1,63,415 KL/Year**

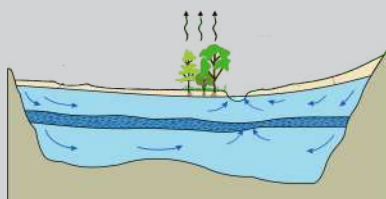
Sr No	CSR Project	Amount Spent (in INR)	No. of Beneficiaries	Post Scenario / Benefits Accrued
1	Pond Development Project	12,20,00,000/-	700 Houses	Water Storage Reservoir of 2,80,000 KL
2	RO Water-system installation	1,45,50,900/-	15 Villages (4500 Houses)	Help to avoid spread of water borne diseases
3	Construction of Overhead Tank, Jesingpura	17,11,000/-	120 Houses	Capacity 50,000 litres 24X7 hour uninterrupted water supply to villages
4	Household Toilet Construction, Vithalapur Village	1,05,00,000/-	300 Houses	Small help to Rural Health Mission

Total: Rs. 14,87,61,900/-

Benefits



Provided Water for Drinking, Irrigation, Household and Other Uses



Increased Water Table of Aquifers



Reduced Water-stress With Regular Water Access



Reduced Open Defecation

सर्वश्रेष्ठ जिला - पश्चिमी त्रिपुरा

पिछले कुछ वर्षों में देखा गया है कि त्रिपुरा में समय-समय पर बाढ़ आती रहती है और 'पश्चिमी त्रिपुरा' जिला इन बाढ़ से काफी प्रभावित होता है। वर्षा के समय कुछ जल तालाबों में एकत्रित हो जाता है, कुछ मिट्टी के भीतर प्रवेश

कर भूजल बन जाता है, कुछ वाष्पीकरण प्रक्रिया में लगता है और जो जल बचता है वह भूमि की सतह पर प्रवाहित होता है। वर्षा के कारण बाढ़ तब आती है जब हमारे तालाब, झील, नदी-नाले व वनस्पतियाँ वर्षा के जल को अवशोषित करने में असमर्थ होते हैं। इस समस्या का हल साधारण है और वह है वर्षा जल प्रबंधन! इस लेख में हम यही जानेंगे कि कैसे पश्चिमी त्रिपुरा जिला अपनी बाढ़ की समस्या को मात दे कर अन्य जिलों के लिए जल संरक्षण की मिसाल बना है।

पश्चिमी त्रिपुरा जिले में वर्ष 2017 से 2019 के बीच कुल मिलाकर 9 बार बाढ़ आई जिस कारण 75,788 लोग प्रभावित हुए और 26,259 घरों को क्षति पहुँची। यह एक तथ्य है कि जल निकास बाढ़ की समस्या को हल करने में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 1 घन मीटर में लगभग 1000 लीटर जल को एकत्रित किया जा सकता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए इस जिले में मन्रेगा(M G N R E G A) व पीएमकेएसवाई (PMKSY) के तहत 500 जल निकायों के निर्माण का निर्णय लिया गया। इनका मुख्य उद्देश्य बाढ़ से बचाव व जल संरक्षण करना ही है। इस प्रयास से 120 करोड़ लीटर जल अतिरिक्त रूप से संरक्षित किया जा सकता है।

वर्ष 2018-19 में इस जिले में मन्रेगा के तहत 170 नए जल निकायों का निर्माण करवाया गया और 24 सामुदायिक जल संसाधनों की मरम्मत की

गई। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत पाइपलाइन के साथ 130 नए पंप सेट भी उपलब्ध कराए गए। इसके अतिरिक्त जल संरक्षण व संचयन हेतु भी कई कार्य किए गए, जिसमें रीचार्ज पिट इत्यादि का निर्माण सम्मिलित है।



इन जल निकायों में एकत्रित किए गए जल को सर्दियों के मौसम में कृषि व सिंचाई के लिए प्रयोग में लाया जाता है। जिले की सभी बड़ी सरकारी, निजी इमारतों व कारखानों में वर्षा जल संचयन प्रणाली स्थापित करना अनिवार्य किया गया है। इन प्रयासों से लोगों को रोजगार मिला है और साथ ही साथ जल संरक्षण की सीख मिली है। बाढ़ से बचाव के इस मॉडल पर अब हर ग्राम सभा में चर्चा की जा रही है। लोगों द्वारा इस बदलाव को सराहा जा रहा है और वे खुद भी इस बाढ़ नियंत्रण और जल संरक्षण की प्रक्रिया में सक्रिय साझेदारी दिखा रहे हैं। जिले में कृषकों को चावल की खेती से ध्यान हटाकर इंटीग्रेटेड फार्मिंग यानी मछली पालन, पशुपालन, सब्जियों की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है जिससे कृषकों को चावल की अपेक्षा में बेहतर मुनाफा मिल रहा है। इन प्रयासों से जल कम खर्च हो रहा है और बेहतर रोजगार व कृषि के अवसरों के कारण जिले के लोगों के जीवन स्तर में भी सुधार आया है।

इस जिले से यह सीख मिलती है कि हो सकता है प्राकृतिक आपदाओं पर मनुष्य का नियंत्रण न हो पर लेकिन उसके

समाधान पर पूरी तरह नियंत्रण मनुष्य का ही है। इस जिले ने जल प्रबंधन का एक अद्भुत उदाहरण पूरे देश के सामने प्रस्तुत किया है। पश्चिमी त्रिपुरा जिले का जल प्रबंधन मॉडल किसी भी क्षेत्र को बाढ़ प्रभावित क्षेत्र से जल संरक्षण क्षेत्र बनाने की क्षमता रखता है।

PEOPLE'S INITIATIVES



Save Sparrow Week 2021 के तहत 15 मार्च को 'कहां गई मेरे आंगन की गौरैया अभियान' के अंतर्गत पर्यावरण क्लब, मेरठ ने एक कार्यक्रम का आयोजन किया। श्री राजेश कुमार, जिला वन अधिकारी, मेरठ कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे, जिन्होंने महिलाओं और टीम को मिट्टी के बर्तन वितरित किए। उन्होंने कहा कि आज वह नाजुक समय है, जब हमें गौरैया के संरक्षण के लिए अपने घरों में पानी से भरे बर्तन रखने की जरूरत है।



बाघ संरक्षण एवं ग्रामीण विकास समिति स. मा. के तत्वाधान में 15 मार्च को मिशन बीट प्लास्टिक रणथम्भोर अभियान के तहत रणथम्भोर परिक्षेत्र के अमरेश्वर महादेव मन्दिर के वनक्षेत्र में करीब 15 किलोग्राम प्लास्टिक व पॉलिथीन की साफ-सफाई की तथा कचरे को नष्ट किया गया। लोगों को प्लास्टिक व पॉलिथीन के दुष्परिणामों के बारे में जागरूक भी किया गया।



Eco-skilled Ganga-mitras from the Super Express Team engaged in a cleanliness drive across 84 Ganga Ghats in Varanasi on 7th March as part of Swachhta Abhiyan.



Namami Maharani Yamune Team initiated a tree plantation drive on the occasion of International Day of Forests (21st March.)



नमामि गंगे परियोजना के अंतर्गत गंगा स्वच्छता पखवाड़ा (16-31 मार्च 2021) महामना मालवीय गंगा शोध केंद्र, बीएचयू, वाराणसी के प्रख्यात पर्यावरण वैज्ञानिक प्रो० बी० डी० त्रिपाठी के निर्देशन में संचालित हुआ। 26 मार्च को अस्सी घाट पर ईको-स्किल्ड गंगामित्र सुपर एक्सप्रेस टीम के तत्वाधान में गंगा-संरक्षण हेतु लाइव पेंटिंग बनाई गई, जिसमें दो महान कलाकारों सलोनी कुमार व राजेश कुमार कुशवाहा ने दो अलग-अलग कैनवास पर भगवान शिव व माँ गंगा की अद्भुत चित्रकारी उकेर कर दर्शकों का मन मोह लिया।

NEWS IN BRIEF



Water resources Secretaries of India-Bangladesh met on 17th March 2021 and discussed range of issues on water sharing of common rivers, extending cooperation in area of pollution control of water bodies and flood forecasting.



The district administration of Varanasi organised a massive cleaning drive at all 84 ghats in the city under the aegis of District Ganga Committee on 7th March 2021. Local people, district officials, volunteers from Ganga Vichar Manch, Ganga Mitras and Ganga Praharis took part in the drive. It covered whole 8 km length of river on both sides and 16 tonne garbage was collected in total. With 700 sanitation staff from Varanasi Municipal Corporation, 600 from other rural areas and nearly 2000 volunteers participating, the drive was a massive success to clean Ganga at Varanasi Ghats.



Sh. M. K. Garg, Scientist, CGWB demonstrated the Rain Water Harvesting Structures in Bhujal Bhawan, Faridabad during the visit of Sh. Pankaj Kumar, Secretary, Dept of WR, RD & GR, Ministry of Jal Shakti to CGWB office.

One of the initiatives taken by the Do WR, RD & GR under DRIP is to start post graduate degree program in apex academic institutions for long term sustainability and Atma Nirbhar Bharat in dam safety. As a result of these efforts, IIT Roorkee has started an M. Tech program in Dam Safety and Rehabilitation, and IISC Bangalore in Dam Engineering from academic session 2021. IIT Madras is also expected to announce this program very soon.



CGWB officers interacted with the beneficiaries of the Pradhan Mantri Krishi Sinchayee Yojana in Gonda District, Uttar Pradesh.



Volunteers of Nehru Yuva Kendra Sangathan, North Tripura dug a pond to conserve rainwater. Small initiatives like these will make 'Catch the Rain' campaign a success.



International Women's Day was observed in the Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation under the chairpersonship of Shri Debashree Mukherjee, Additional Secretary who interacted with women officers of the Department.



Physical verification of wells constructed by WAPCOS was conducted by the authorities in the Aspirational districts of Siddharthnagar and Balrampur of Uttar Pradesh.

NEWS IN BRIEF



Second meeting of SLEC, Jammu & Kashmir was held under the Chairmanship of Secretary, Jal Shakti Department, Govt of Jammu & Kashmir in Civil Secretariat, Jammu.



Sh. G. C. Pati, Chairman, CGWB was the Key Speaker in the seminar regarding 'Sustainable Water Management, Conservation and Rejuvenation' at the 2nd National Water Summit.



Sh. G. C. Pati, Chairman, CGWB addressed the National Workshop on 'Ground Water Systems: Challenges and Opportunities' on 24th March at Vijayawada, Andhra Pradesh. Dr. Anil Kumar Yadav, Hon'ble Minister for Water Resources, Govt. of Andhra Pradesh graced the occasion as the Chief Guest.



Heliborne Survey was conducted in the Ganga Yamuna Doab area in Fatehpur, Uttar Pradesh.



A meeting of the Fluorosis Mitigation Unit was organized to assess the extent of fluoride contamination in Chickballapur District, Karnataka. Chaired by CEO, Chikkballapur District, the meeting was attended by representatives from CGWB, Bangalore, IISc, Bangalore, INREM Foundation and State Government departments.



Sh. S. Marwaha, Member (HQ), CGWB attended the 2nd High-Level Joint Working Group Meeting on water cooperation held virtually on 24th March under MoU signed between India and European Union. The objective of the meeting was to take stock of progress in the implementation of the India-European Union Water Partnership (IEWP) and discuss strategic priorities of water-related cooperation. The Indian group was led by Ms. Debashree Mukherjee, Additional Secretary, Ministry of Jal Shakti, Govt. of India.



Public Interaction Programmes were conducted by CGWB on 'Sustainable Groundwater Management' at various locations in Karnataka, Uttar Pradesh, Odisha and Himachal Pradesh.



A special study has been conducted at an acid mine drainage site at North Eastern Coal Field, Margherita, Tinsukia District, Assam.



CSMRS Visits to Projects in Gujarat and Jharkhand
Senior officials of CSMRS visited Sardar Sarovar Dam, Gujarat and Chandil Dam Project, Jharkhand for the installation and monitoring of extensometers, 3D and 2D crack monitors and other instruments. Reports of the monitoring work carried out in February 2021 were sent to the Project authority in March 2021.



Luhri Stage II H.E. Project, Himachal Pradesh:

CSMRS rock mechanics team visited the above project site for conducting plate load tests in power house drift for the determination of modulus of deformation of rock mass, which is a vital parameter needed for the design and analysis of powerhouse.



Tapovan Vishnugad H.E. Project, Uttarakhand:

Tapovan Vishnugad Hydroelectric Project near Joshimath, Uttarakhand, a run-of-the river scheme on river Dhauliganga, is being constructed to generate 130 MW of hydropower. Various components of the projects were under different stages of construction when the project was severely hit by an unprecedented glacial debris flow emanating from Rishiganga valley on 7th February 2021. Rishiganga hydropower project, which was generating 13 MW of power, was completely devastated due to the impact of glacial debris flow whereas Tapovan Vishnugad Project suffered heavy damages apart from loss of lives. On request from NTPC, a team of experts comprising members from CWC, CEA, CSMRS, GSI and NTPC was formulated to chalk out the action-plan for restoration of Tapovan Vishnugad project. Sh. Hari Dev, Scientist 'E' led the CSMRS team. The Committee visited all the affected project components during 16-18 March 2021 and held a series of meetings with project authorities, Various short-term and long-term measures are being suggested to restore the damaged structures, including barrage, intake, desilting chamber, HRT, silt flushing tunnel, TRT and underground powerhouse.



The Hard Rock Regional Centre, NIH-Belagavi organized an awareness programme on "Waste Management" and Cleaning of Drinking Water Supply Tanks of Mutaga and Shindoli villages of Belagavi Taluk on 18th March 2021.



The 19th Regional Coordination Committee (RCC) meeting of NIH Regional Centre, Bhopal was organised on 18th March 2021 under the chairmanship of Dr. J.V. Tyagi, Director, NIH.



Gajendra Singh Shekhawat @gssjodhpur · Mar 13

In this direction, having provided water to over 7 crore homes across the country in the last 18 months since inception, we have today released a Drinking-water quality monitoring and surveillance framework.

#HarGharJal
#JalJeevanMission



5 38 251

Gajendra Singh Shekhawat @gssjodhpur · Mar 4

Water outside is all frozen but through the newly installed taps under #JalJeevanMission it flows uninterrupted into the homes of Ladakh even at sub zero temperature.

Come storm or snow - We are committed to bring #HarGharNalSeJal.



Explained: How Jal Jeevan Mission Brought Piped Drinking Water To St...
The central government started work for the Jal Jeevan Mission in Ladakh in September 2020.
@swarajyamag.com

3 76 204

Gajendra Singh Shekhawat @gssjodhpur · Mar 23

'Vision of self-reliance India is dependent on water connectivity,' says PM Modi at #CatchTheRain campaign launch.

#JalShaktiAbhiyan

hindustantimes.com/india-news/pm-... via NaMo App

'Vision of self-reliance India is dependent on water connectivity,' says PM Modi at 'Catch the Rain' campaign launch

Hindustan Times March 23rd, 2021

Gajendra Singh Shekhawat Retweeted

Ministry of Jal Shakti #StayHome #StaySafe @MoJSDo... · Mar 1

This month, as we celebrate the International Women's Day, we dedicate the month to all the women who put efforts every day in so many activities related to water.



1 44 162

Gajendra Singh Shekhawat @gssjodhpur · Mar 31

जल जीवन मिशन ने स्थापित किया नया आयाम।

15 अगस्त, 2019 को मिशन की शुरुआत से अब तक 4.01 करोड़ से अधिक ग्रामीण घरों में पहुंचाया जा चुका है नल से शुद्ध जल।

कुल 7.24 करोड़ (37.78%) ग्रामीण परिवारों को मिल रहा नल से शुद्ध जल।

#HarGharJal
#JalJeevanMission



You and 9 others

24 90 517

Gajendra Singh Shekhawat @gssjodhpur · Mar 22

Proud to share on #WorldWaterDay our yet another milestone achieved.

Andaman & Nicobar islands become 3rd state to have 100% FHTC after Goa & Telangana.

One tap at a time, One state at a time. #HarGharJal aims to achieve its target way before the deadline.

#JalJeevanMission

4 56 312

IN NEWSPAPER



फोटो स्टोरी: चेन्नई में पानी की समस्या से निजात पाने के लिए 250 तालाबों को जिंदा किया जा रहा, कुओं को नया रूप दे रहे

विपत्ति का पीछा करती है। चेन्नई में पानी की समस्या से निजात पाने के लिए 250 तालाबों को जिंदा किया जा रहा है, कुओं को नया रूप दे रहे हैं।

जल जीवन मिशन की प्रगति की समीक्षा



नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : केंद्रीय जल मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने सभी राज्यों-केंद्र शासित प्रदेशों के ग्रामीण जलापूर्ति के प्रभारी मंत्रियों के साथ एक वebinार की अध्यक्षता की और 2024 तक प्रत्येक ग्रामीण परिवार में नल के माध्यम से जल कनेक्शन प्रदान करने के लिए केंद्र सरकार के एक प्रमुख कार्यक्रम जल जीवन मिशन के तहत की गई प्रगति की समीक्षा की। इस वर्युअल सम्मेलन में जल शक्ति राज्य मंत्री रतन लाल कटारिया, डीडीडब्ल्यूएस सचिव पंकज कुमार, अपर सचिव और मिशन निदेशक भरत लाल भी उपस्थित थे। केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि 'हर घर जल' केवल एक बार का बुनियादी ढांचा बनाने का कार्यक्रम नहीं है। यह अग्रिम पंक्ति के कार्मिकों के क्षमता निर्माण, महिलाओं को सशक्त बनाने और गांवों में रोजगार सृजन के संदर्भ में एक दीर्घकालीन मार्ग तय करेगा। केंद्रीय मंत्री ने पेयजल गुणवत्ता जांच, निरीक्षण और निगरानी" प्रारूप जारी करने के साथ-साथ जल गुणवत्ता प्रबंधन सूचना प्रणाली (डब्ल्यूक्यूएमआईएस) का भी शुभारंभ किया।

Telangana, Andaman and Goa households get tap water supply



The Centre's Jal Jeevan Mission got a big boost with Goa, Telangana and the Andaman and Nicobar islands providing tap water to every household, the government said on Saturday. The government also said that 40 million households have been provided with tap water connections since the scheme was announced on 15 August 2019. The government must aim to supply tap water to all rural households by 2024. Presently, Andaman and Nicobar Islands, Goa and Telangana have become 'Har Ghar Jal' states, or 100% and every household in 23 districts and 85,000 villages of the country have tap water supply. The Jal Shakti ministry said in a statement. In the Union budget for FY22, an outlay of ₹2.87 trillion was announced for the launch of the Jal Jeevan Mission Urban. The aim is to supply water to 4.378 urban local bodies with 268 million tap water connections. "Since the announcement of Jal Jeevan Mission on 15 August 2019, so far, 40 million households have been provided tap water connections, thus increasing the tap water supply from 32.3 million (7%) to over 72 million (37.6%) rural households in the country," the ministry added. In July 2019, the Centre had formed the Jal Sakhi ministry to ensure 'Har Ghar Jal' to every rural household by 2024.

NREGS funds must be used to save water: PM

HT Correspondent
letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: Prime Minister Narendra Modi on Monday said maximum funds from the National Rural Employment Guarantee Scheme should be utilised for projects to augment water conservation and supply till the onset of monsoon, as he launched the Jal Shakti Abhiyan's second leg on the occasion of World Water Day.



PM Narendra Modi

the majority of rainwater during the monsoon months is simply washed away. Conserving rainwater will ease the pressure on groundwater in stressed areas. According to official data, 254 districts in the country are said to face acute water stress. He said the campaign, which will run from March through November, should focus on conserving every drop of water. "I would want to see that every penny of MNRREGA till the rainy season comes, should be utilised for this purpose. Money available under MNRREGA should not go anywhere else other than for whatever is required for readiness to conserve water," the prime minister said. Modi said a major step had been taken for the Ken-Betwa link canal, adding that "rapid development is not possible without water security and effective water management".

जल क्षेत्र में भारत-जापान के बीच सहयोग जापान को मंजूरी

नई दिल्ली (भाषा)। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने जल संसाधन के क्षेत्र में भारत और जापान के बीच हुए सहयोग जापान (एमओसी) को मंगलवार को मंजूरी प्रदान कर दी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अध्यक्षता में हुई केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में इस पर मूद्र लगाई गई। यहाँ जारी एक सरकारी बयान के अनुसार बैठक में मंत्रिमंडल को जल संसाधन के क्षेत्र में जल शक्ति मंत्रालय के जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग तथा जापान के भूमि, आधारभूत संरचना, परिवहन और पर्यटन मंत्रालय के जल और आपदा प्रबंधन ब्यूरो के बीच हस्ताक्षर हुए सहयोग जापान (एमओसी) से अवगत कराया गया। दोनों देशों के बीच सूचना, ज्ञान, प्रौद्योगिकी और विज्ञान आधारित अनुभव के आदान-प्रदान को बढ़ाने के साथ-साथ संयुक्त परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए इस सहयोग पत्र पर हस्ताक्षर किए गए हैं। एमओसी का लक्ष्य जल और डेल्टा प्रबंधन तथा जल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दीर्घकालिक सहयोग को विकसित करना है। इससे जल सुरक्षा, बेहतर सिंचाई सुविधा और जल संसाधन विकास में स्थायित्व का लक्ष्य हासिल करने में मदद मिलेगी। यूपीएससी व अफगानिस्तान के लोक सेवा आयोग के बीच एमओयू को मंजूरी: केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भारत के संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) और अफगानिस्तान के स्वतंत्र प्रशासनिक सुधार और लोक सेवा आयोग (आईएएससीएससी) के बीच समझौता जापान (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए जाने को मंगलवार को मंजूरी प्रदान कर दी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में हुई केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में यह फैसला किया गया। सरकारी बयान के अनुसार इस एमओयू से आईएएससीएससी और यूपीएससी के बीच संबंधों को मजबूती मिलेगी। यह उम्मीदवारों के चयन के क्षेत्र में दोनों पक्षों को अनुभव और विशेषज्ञता को साझा करने की सुविधा प्रदान करेगा।

मोदी ने जल शक्ति अभियान 'कैच द रेन' की शुरुआत की भारत की आत्मनिर्भरता जल संसाधनों पर निर्भर



संरक्षण पर जोर

नई दिल्ली | विशेष संवाददाता

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को विश्व जल दिवस पर जल शक्ति अभियान 'कैच द रेन' की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि भारत की आत्मनिर्भरता जल संसाधनों पर निर्भर है। जल के प्रचुर संरक्षण के बिना भारत का विकास संभव नहीं है। उन्होंने प्रत्येक गांव में अग्रिम पंक्ति के कार्मिकों को सशक्त बनाने की आवश्यकता को मंजूर किया।

वर्षा का माध्यम से कार्यक्रम में हिस्सा लेते हुए प्रधानमंत्री ने देश के पांच राज्यों से जुड़े पांच राज्यों के जल संसाधन के लिए केंद्र सरकार की जांच करती है और जल की कमी को पूरा करने के लिए कार्यक्रम को संशोधित करते हुए मोदी ने देश में वर्षा का अधिकतम जल बचाने के लिए जल जीवन मिशन शुरू करने का फैसला किया। उन्होंने कहा कि हर घर जल मिशन का लक्ष्य है कि हर परिवार को सशक्त बनाया जा सके।

वर्षा का माध्यम से कार्यक्रम में हिस्सा लेते हुए प्रधानमंत्री ने देश के पांच राज्यों से जुड़े पांच राज्यों के जल संसाधन के लिए केंद्र सरकार की जांच करती है और जल की कमी को पूरा करने के लिए कार्यक्रम को संशोधित करते हुए मोदी ने देश में वर्षा का अधिकतम जल बचाने के लिए जल जीवन मिशन शुरू करने का फैसला किया। उन्होंने कहा कि हर घर जल मिशन का लक्ष्य है कि हर परिवार को सशक्त बनाया जा सके।

PM launches 'Catch the Rain' campaign

NEW DELHI: Narendra Modi, PM, on Monday pitched for giving women the leadership role in society with regard to water management. Launching 100-day "Jal Shakti Abhiyan: Catch the Rain" drive on World Water Day, he directed that during this period MGNREGA activities be focused only towards rainwater conservation. TNS

Gandhi Research Foundation (GRF) Jalgaon

To celebrate 150th birth anniversary of Kasturba and Mahatma Gandhi, Gandhi Research Foundation has been working earnestly towards making 150 villages from across India completely self-reliant in the next 5 years through a unique program 'Ba-Bapu 150' since 2nd October 2018.



Water conservation- Vaijapur, Shenpani and Borajanti (Taluka Chopda - Maharashtra) Under 'Ba-Bapu 150' Project

These lakes now collectively hold about **13.40** crore litres of water.

Name of the Village	Population	Distance From the Lake	Year	Water Storage Capacity	Expenditure (in INR)
Vaijapur	1821	400 metres	2019	8 crore litre	568928/-
Shenpani	1256	250 metres	2019	5 crore litre	399144/-
Borajanti	2351	200 metres	2019	40 lakh litre	72150/-

Since March 2018 GRF has started conducting a Water Week annually along with World Water Day in Jalgaon to propagate the importance of water conservation to reduce the impact of water scarcity and global warming.

Dr. Bhavarlalji Jain Drinking Water Scheme

This dream project of Bhavarlalji Jain of providing pure and safe drinking water at a very low cost to rural people was undertaken and completed with people's participation at Kurangi (Taluka Pachora), Takarkheda and Vavadada.



Jal Sanrakshan Abhiyan

We have inspired over **10,000** students in **15** schools in Jalgaon to take the Jal Shapath (Water Pledge).



बाल भारती पब्लिक स्कूल, दिल्ली

बच्चे किसी भी देश या समाज के सबसे महत्वपूर्ण संसाधन होते हैं, आप यह कथन अपने बचपन से अवश्य ही सुन रहे होंगे। लेकिन वह क्या बात है जो एक बच्चे को सबसे मूल्यवान संसाधन बनाती है? वह खासियत है उनकी क्षमता जिसे 'पोटेंशियल' कहा जाता है। बालपन वह समय होता है जिसमें नए-नए आयामों का पता लगाया जाता है। बच्चे किसी भी बदलाव के प्रति 'रिजिड' नहीं होते जिस कारण उन्हें नई-नई चीजें सिखाना आसान हो जाता है। यही उनका गुण है जो उन्हें अन्य आयुवर्ग के लोगों से भिन्न और मूल्यवान बनाता है। इस गुण का ही सही इस्तेमाल करते हुए अनेकों विद्यालयों में 'जल शिक्षा' दी जा रही है। इन्हीं विद्यालयों में से एक है दिल्ली का बाल भारती पब्लिक स्कूल जिसके बारे में हम आपको इस लेख में बता रहे हैं।

दिल्ली के राजिंदर नगर में स्थित बाल भारती पब्लिक स्कूल जल संरक्षण के क्षेत्र में अद्भुत कार्य कर रहा है जिससे एक जिम्मेदार पीढ़ी का निर्माण किया जा सके। यह विद्यालय अपने विद्यार्थियों को पर्यावरण व समाज की समस्याओं से अवगत कर संवेदनशील बनाने का प्रयास कर रहा है। बाल भारती पब्लिक स्कूल द्वारा जल संरक्षण की दिशा में कई अहम कार्य किए गए हैं जिसका उद्देश्य जल संरक्षण के साथ-साथ बच्चों को भी जल जागरूक बनाना है।

यहाँ बच्चों को जागरूक बनाने के लिए पर्यावरण सप्ताह आयोजित कराए जाते हैं। वर्ष 2019 तक ऐसे तीन पर्यावरण सप्ताह आयोजित किए गए जिसमें से दो पर्यावरण सप्ताह अपने विद्यालय के छात्रों के साथ और एक पर्यावरण सप्ताह दूसरे विद्यालय के छात्रों के साथ मिलकर आयोजित किये गए। इन पर्यावरण सप्ताह की दिलचस्प बात यह है कि इसमें बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए पेंटिंग, निबंध लेखन व वाद विवाद जैसी कई प्रतियोगिताएँ भी शामिल की जाती हैं। इन प्रतियोगिताओं में बच्चों को एक स्वस्थ प्रतियोगिता के माहौल के बीच अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिलता है।

विद्यालय के परिसर में 2 वर्षा जल संचयन संरचनाएँ स्थापित कराई गई हैं जो वर्षा जल संचित करने के साथ-साथ भूजल पुनर्भरण प्रक्रिया में भी सहायक हैं। बाल भारती स्कूल के परिसर में भूजल स्तर पहले नीचे था, लेकिन वर्षा जल संचयन प्रणाली विकसित करने के बाद यहाँ यह भूजल स्तर काफी बेहतर हुआ है। इस एकत्रित जल को पौधों को पानी देने के लिए शौचालयों में इस्तेमाल किया जाता है। शौचालयों में पानी की खपत को सुधारने के लिए पानी की बचत वाले प्लंबिंग फिक्सचर लगवाए गए हैं। इन फिक्सचर के कारण अब जल की बर्बादी नहीं होती है। विद्यार्थी दिन के अंत में अपनी पानी की बोतल का पानी फेंकने की जगह उसे एक बड़े ड्रम में डालते हैं। इस पानी को फिर सफाई हेतु प्रयोग में लाया जाता है।

इस स्कूल में वर्ष 2019-20 को Year of Water के रूप में मनाया गया और साथ ही साथ विंटर कार्निवल में भी जल संरक्षण की थीम को शामिल किया गया। स्कूल के बाहर भी लोगों को जल के प्रति जागरूक करने के लिए विद्यालय द्वारा नुक्कड़ नाटक आयोजित कराए जाते हैं जिसमें विद्यार्थी ही जल संरक्षण का महत्वपूर्ण संदेश जनता तक पहुंचाते हैं। स्कूल को हरा भरा बनाए रखने के लिए यहाँ समय - समय पर वृक्षारोपण अभियान भी चलाए जाते हैं

जिसमें सभी कक्षाओं के बच्चे भाग लेते हैं।

सब से अहम बात यह है कि इस स्कूल द्वारा बच्चों को अपने घर और समाज में 'चेंज एजेंट' बनने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। विद्यालय में एक टीम द्वारा बच्चों का जल संरक्षण की दिशा में मार्गदर्शन किया जाता है जिसके लिए कार्यशालाएँ आयोजित कराई जाती हैं। यह स्कूल बच्चों को केवल जल संरक्षण ही नहीं सिखा रहा है बल्कि पर्यावरण के अन्य अहम घटकों के प्रति भी जागरूक कर रहा है। स्कूल में वृक्ष व ऊर्जा संरक्षण जैसे विषयों से भी बच्चों को अवगत कराया जा रहा है। बाल भारती पब्लिक स्कूल द्वारा जल संरक्षण के क्षेत्र में किए जा रहे सभी कार्य अन्य स्कूलों व लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। आपको भी इससे प्रेरित हो कर जल संरक्षण में अपना योगदान अवश्य देना चाहिए।





जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग
भारत सरकार
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION
GOVERNMENT OF INDIA



save
water



Save Water Save Life

“Water Heroes - Share Your Stories 2.0”

FREE

ENTRY

Win Rs.10,000*

Ten Prizes

Be a Water Hero

**Share your success stories
in the field of water conservation**

BUMPER PRIZES

- TEN PRIZES OF RS- 10000/- EACH MONTH
- SHARE YOUR STORY IN MAX 300 WORDS
- SHARE YOUTUBE LINK OF YOUR VIDEO (1 TO 5 MINUTES)
- SHARE THE PICTURE OF YOUR WORK

Send your entries: waterheroes.cgwb@gmail.com

For Application

Log in to www.mygov.in

For more details

Visit www.mygov.in

www.jalshakti-dowr.gov.in

*T & C Applied.

#JanShakti4JalShakti

अथर्ववेद में जल संरक्षण

*यद् वो देवा अपजीका आसिंञ्चन धन्वन्युदकम् ।
तेन देव प्रसूतेनदं दूषयता विषम् ॥*

विद्वान लोग कुएं, तालाब, नहरों आदि के माध्यम से रेगिस्तानी इलाकों में जल लाते हैं। आदमी को सूखे, बाढ़ और प्राकृतिक आपदाओं के बारे में पहले से सोचना चाहिए और उसके अनुसार निवारण करना चाहिए ।

Share your suggestions & feedback at media-mowr@nic.in